एम.ए. हिन्दी, उत्तरार्द्ध (चतुर्थ सेमेस्टर)
(सत्र 2009–10 से प्रभावी)

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटे

प्रश्न–पत्र 6 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

प्रश्न–पत्र 7 काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

प्रश्न–पत्र 8 प्रयोजनमूलक हिन्दी

प्रश्न–पत्र 9 भारतीय साहित्य

प्रश्न–पत्र 10(1) कबीरदास

प्रश्न–पत्र 10(।।) तुलसीदास

प्रश्न–पत्र 10(।।।) सूरदास

प्रश्न–पत्र 10(IV) रीतिकाल

प्रश्न–पत्र 10(V) राजभाषा–प्रशिक्षण

प्रश्न–पत्र 10(VI) कोश–विज्ञान

प्रश्न–पत्र 10(VII) हरियाणा का हिन्दी साहित्य

एम.ए. हिन्दी, उत्तरार्द्ध (चतुर्थ सेमेस्टर)
(सत्र 2009–10 से प्रभावी)

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटे

प्रश्न–पत्र 6 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
निर्देश :

1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है–(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या (ख) आलोचनात्मक प्रश्न (ग) लघूत्तरी प्रश्न (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।
2. खण्ड–(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या से संबंधित है। व्याख्यार्थ दो पुस्तकों (जायसी ग्रन्थावली, घनानंद कवित्त) में से छः अवतरण पूछे जायेंगे, जिनमें से तीन अवतरणों की व्याख्या करनी होगी । यह खण्ड 30 (3 X 10) अंकों का होगा। अवतरण शत–प्रतिशत विकल्प सहित होंगे ।
3. खण्ड–(ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से संबंधित है। आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित कवि (सूरदास) और उनकी रचनाओं पर आधारित छः आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। यह खण्ड 45 (3 X 15) अंकों का होगा ।
4. खण्ड–(ग) लघूत्तरी प्रश्नों से संबंधित है। यहां पांच कवियों (रैदास, रहीम, केशव, भूषण, गुरु गोबिन्द सिंह) तथा उनकी कृतियों का द्रुतपाठ अपेक्षित है। प्रश्न–पत्र में प्रत्येक कवि से संबंधित दो–दो प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15 (5 X 3) अंक निर्धारित हैं।
5. खण्ड–(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से संबंधित है। यहां खण्ड–(क) और खण्ड–(ख) में नियत कवियों (जायसी, घनानंद, सूरदास) और उनकी रचनाओं पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे। इन प्रश्नों में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10 (10 X 1) अंकों का होगा।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ

1. जायसी ग्रन्थावली, सं. रामचन्द्र शुक्ल (नखशिख खण्ड, नागमती वियोग खण्ड, नागमती संदेश खण्ड=कुल तीन खण्ड)
2. घनानंद कवित्त, सं. विश्वनाथप्रसाद मिश्र ।

आलोचनात्मक प्रश्नों के लिए निर्धारित विषय :

1. सूरदास–व्यक्तित्व और युग, दार्शनिक चेतना, भक्ति–भावना, शृंगार वर्णन, वात्सल्य वर्णन, कृष्ण और राधा का शील निरूपण, सौंदर्य बोध, प्रकृति चित्रण, गीतात्मकता, भाषा, भ्रमरगीत–परम्परा में सूर के ''भ्रमरगीत'' का स्थान, भ्रमरगीत में वाग्वैदग्ध्य, कृष्ण काव्यधारा में सूर का स्थान।

सन्दर्भ–सामग्री :

1. यश गुलाटी; सूफी कविता की पहचान; प्रवीण प्रकाशन; दिल्ली; 1979
2. राजदेव सिंह; पद्मावत : मूल्यांकन; पाण्डुलिपि प्रकाशन; दिल्ली, 1975
3. भीमसिंह मलिक; जायसी काव्य का सांस्कृतिक अध्ययन; कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र, 1977
4. रामचन्द्र शुक्ल; सूरदास; नागरी प्रचारिणी सभा, काशी; 1973
5. ''सम्भावना''; सूर विशेषांक; हिन्दी विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
6. हरवंश लाल शर्मा; सूर और उनका साहित्य; भारत प्रकाशन मन्दिर; अलीगढ़, 1964

7. कृष्णचन्द्र वर्मा; रीति स्वच्छन्द काव्यधारा; कैलाश पुस्तक सदन, ग्वालियर; 1967
8. लल्लनराय; घनानन्द; साहित्य अकादमी, दिल्ली, 1983

एम.ए. हिन्दी, उत्तरार्द्ध (चतुर्थ सेमेस्टर)
(सत्र 2009–10 से प्रभावी)

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटे

प्रश्न–पत्र 6 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
प्रश्न–पत्र 7 काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन

निर्देश :

1. पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है – (क) आलोचनात्मक प्रश्न, (ख) लघूत्तरी प्रश्न (ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न (घ) व्यावहारिक समीक्षा ।
2. खण्ड–(क) आलोचनात्मक प्रश्नों से संबंधित है। निर्धारित पाठ्य विषयों में से छः प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से तीन प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। इसके लिए 60 (3 X 20) अंक निर्धारित हैं।
3. प्रश्न–पत्र में समूचे पाठ्य विषयों पर आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों में होगा। इसके लिए 20 (5 X 4) अंक निर्धारित हैं।
4. समूचे पाठ्य विषयों पर ही आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जायेंगे। इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। इस खण्ड के लिए 10 (10 X 1) अंक निर्धारित हैं।
5. खण्ड–(घ) के अन्तर्गत कोई एक काव्यांश दिया जाएगा, जिसकी व्यावहारिक समीक्षा लिखनी होगी। इस खण्ड के लिए 10 अंक निर्धारित है।

पाठ्य विषय :

पाश्चात्य काव्यशास्त्र
प्लेटो : काव्य सिद्धान्त
अरस्तू : अनुकरण सिद्धान्त, त्रासदी–विरेचन
लोन्जाइनस : उदात्त की अवधारणा
ड्राइडन : काव्य सिद्धान्त
वर्ड्सवर्थ : काव्य भाषा का सिद्धान्त
कॉलरिज : कल्पना सिद्धान्त और ललित कल्पना
मैथ्यू आर्नल्ड : आलोचना का स्वरूप और प्रकार्य
टी.एस.इलियट : परम्परा की परिकल्पना और वैयक्तिक प्रज्ञा, निवैयक्तिकता का सिद्धान्त, वस्तुनिष्ठ समीकरण–संवेदनशीलता का असाहचर्य
आई.ए.रिचर्ड्स : रागात्मक अर्थ, संवेगों का संतुलन, व्यावहारिक आलोचना
सिद्धान्त और वाद : अभिजात्यवाद, स्वच्छंदतावाद, अभिव्यंजनावाद, मार्क्सवाद, मनोविश्लेषण, अस्तित्ववाद।
आधुनिक समीक्षा की विशिष्ट प्रवृत्तियां–संरचनावाद, शैली विज्ञान, विखंडन सिद्धान्त, उत्तर आधुनिकतावाद

सन्दर्भ–सामग्री :

1. भारतीय तथा पाश्चात्य काव्यशास्त्र; सत्यदेव चौधरी एवं शान्ति स्वरूप गुप्त; अशोक प्रकाशन; दिल्ली, 1978
2. भारतीय एवं पाश्चात्य काव्य सिद्धान्त; गणपति चन्द्र गुप्त; लोकभारती प्रकाशन; इलाहाबाद; 1990
3. समीक्षा शास्त्र; दशरथ ओझा; राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली, 1972

4. पाश्चात्य साहित्यालोचन के सिद्धान्त; लीलाधर गुप्त; हिन्दुस्तानी एकेडमी; इलाहाबाद, 1952
5. पाश्चात्य काव्यशास्त्र के सिद्धान्त; मैथिलीप्रसाद भारद्वाज; हरियाणा साहित्य अकादमी; चण्डीगढ़; 1988
6. पाश्चात्य काव्यशास्त्र की परम्परा; नगेन्द्र एवं सावित्री सिन्हा, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, 1972
7. पाश्चात्य काव्यशास्त्र : सिद्धान्त और वाद; नगेन्द्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; 1967
8. हिन्दी आलोचना : उद्‌भव और विकास; भगवतस्वरूप मिश्र; साहित्य सदन देहरादून; 1972
9. हिन्दी आलोचना; अतीत और वर्तमान; प्रभाकर माचवे; हिन्दुस्तानी एकेडमी; इलाहाबाद 1988
10. मार्क्सवादी, समाजशास्त्रीय और ऐतिहासिक आलोचना; पाण्डेय शशिभूषण ''शीतांशु''; राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली 1992
11. नई समीक्षा; महेन्द्र चतुर्वेदी एवं राजकुमार कोहली; विश्वविद्यालय ग्रन्थ निर्माण निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली; 1980

एम.ए. हिन्दी, उत्तरार्द्ध (चतुर्थ सेमेस्टर)
(सत्र 2009–10 से प्रभावी)

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटे

प्रश्न–पत्र 6 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
प्रश्न–पत्र 7 काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन
प्रश्न–पत्र 8 प्रयोजनमूलक हिन्दी

निर्देश :

1. पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है – प्रत्येक खण्ड से दो–दो आलोचनात्मक प्रश्न पूछे जायेंगे, प्रत्येक खंड से किसी एक का उत्तर देना होगा। इसके लिए 60(4 X 15) अंक निर्धारित हैं।
2. समूचे पाठ्य विषयों पर आधारित दस लघूत्तरी प्रश्न पूछे जायेंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे । प्रत्येक प्रश्न का उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इसके लिए 20(5 X 4) अंक निर्धारित है।
3. समूचे पाठ्य विषयों पर आधारित बीस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनके लिए 20(20 X 1) अंक निर्धारित है। इसमें कोई विकल्प नहीं होगा।

पाठ्य–विषय :

खण्ड–(क) मीडिया लेखन, जनसंचार, प्रौद्योगिकी एवं चुनौतियाँ, विभिन्न जनसंचार माध्यमों का स्वरूप : मुद्रण, श्रव्य, दृश्य–श्रव्य, इंटरनेट, श्रव्य माध्यम (रेडियो) : मौखिक भाषा की प्रकृति, समाचार लेखन एवं वाचन, रेडियो नाटक, उदघोषणा लेखन, विज्ञापन लेखन, फीचर तथा रिपोर्ताज ।

खण्ड–(ख) दृश्य–श्रव्य माध्यम (फिल्म, टेलिविजन एवं वीडियो) : दृश्य माध्यमों में भाषा की प्रकृति, दृश्य एवं श्रव्य सामग्री का सामंजस्य, पार्श्व वाचन (वायस ओवर), पटकथा लेखन, टेली ड्रामा/डाक्यूड्रामा, संवाद लेखन, साहित्य की विधाओं का दृश्य माध्यमों में रूपांतरण, विज्ञापन की भाषा ।

खण्ड–(ग) अनुवाद : सिद्धान्त एवं व्यवहार, अनुवाद का स्वरूप, क्षेत्र, प्रक्रिया एवं प्रविधि, हिन्दी की प्रयोजनीयता में अनुवाद की भूमिका, कार्यालयी हिन्दी और अनुवाद, जनसंचार माध्यमों का अनुवाद, विज्ञापन में अनुवाद, वाणिज्यिक अनुवाद, वैचारिक साहित्य का अनुवाद ।

खण्ड–(घ) वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रौद्योगिकी क्षेत्रों में अनुवाद, विधि साहित्य की हिन्दी और अनुवाद, व्यावहारिक–अनुवाद–अभ्यास, कार्यालयी अनुवाद : कार्यालयी एवं प्रशासनिक शब्दावली, प्रशासनिक प्रयुक्तियां, पदनाम, विभाग आदि, पत्रों, पदनामों, अनुभागों, दस्तावेजों के अनुवाद ।

सन्दर्भ–सामग्री :

1. विनोद कुमार प्रसाद; भाषा और प्रौद्योगिकी; वाणी, नई दिल्ली ।
2. प्रेमचंद पतंजलि; व्यावसायिक हिन्दी; वाणी, नई दिल्ली ।
3. प्रेमचन्द पतंजलि : आधुनिक विज्ञापन;नई दिल्ली ।
4. विनोद गोदरे; प्रयोजनमूलक हिन्दी, नई दिल्ली ।
5. रविन्द्रनाथ श्रीवास्तव; प्रयोजनमूलक हिन्दी; केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा ।
6. दंगल झाल्टे; प्रयोजनमूलक हिन्दी; सिद्धान्त और प्रयोग; वाणी, नई दिल्ली ।
7. शिवनारायण चतुर्वेदी; टिप्पणी प्रारूप; वाणी, नई दिल्ली ।
8. शिवनारायण चतुर्वेदी; प्रालेखन प्रारूप; वाणी नई दिल्ली ।
9. मणिक मृगेश; राजभाषा विविधा; वाणी, नई दिल्ली ।
10. कैलाश चन्द्र भाटिया, राजभाषा हिन्दी; वाणी, नई दिल्ली ।

11. महेश चन्द्र गुप्त; प्रशासनिक हिन्दी : ऐतिहासिक संदर्भ वाणी, नई दिल्ली ।
12. रहमतुल्लाह; व्यावसायिक हिन्दी; वाणी, नई दिल्ली ।
13. भोलानाथ तिवारी एवं विजय कुलश्रेष्ठ; पत्र – व्यवहार निर्देशिका; वाणी ।
14. भोलानाथ तिवारी; प्रारूपण, टिप्पण और प्रूफ–पठन;वाणी, नई दिल्ली ।
15. श्री राम मुदे; बीमा के तत्त्व; वाणी, नई दिल्ली ।
16. कृष्ण कुमार गोस्वामी; व्यावहारिक हिन्दी और स्वरूप; वाणी, नई दिल्ली ।
17. बालेन्दुशेखर तिवारी सं.; प्रयोजनमूलक हिन्दी; संजय बुक सैन्टर, वाराणसी ।

एम.ए. हिन्दी, उत्तरार्द्ध (चतुर्थ सेमेस्टर)
(सत्र 2009–10 से प्रभावी)

पूर्णांक : 100
समय : 3 घंटे

प्रश्न–पत्र 6 प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य
प्रश्न–पत्र 7 काव्यशास्त्र एवं साहित्यालोचन
प्रश्न–पत्र 8 प्रयोजनमूलक हिन्दी
प्रश्न–पत्र 9 भारतीय साहित्य

निर्देश :

1. समूचा पाठ्यक्रम चार खण्डों में विभक्त है – (क) संदर्भ साहित व्याख्या (ख) आलोचनात्मक प्रश्न (ग) लघूत्तरी प्रश्न (घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्न ।
2. खण्ड–(क) सन्दर्भ सहित व्याख्या से संबंधित है। व्याख्यार्थ निर्धारित पुस्तकों (अग्निगर्भ) एवं (घासीराम कोतवाल) में से छः अवतरण पूछे जाएंगे, जिनमें से तीन अवतरणों की व्याख्या करनी होगी। यह खण्ड 30(3 X 10) अंकों का होगा ।
3. खण्ड–(ख) आलोचनात्मक प्रश्नों से संबंधित है। निर्धारित पाठ्य विषयों में से छः प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से तीन प्रश्नों का उत्तर देना होगा । यह खण्ड 45(3 X 15) अंकों का होगा ।
4. खण्ड–(ग) लघूत्तरी प्रश्नों से संबंधित है। निर्धारित पाठ्य विषयों में से दस प्रश्न पूछे जाएंगे, जिनमें से किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर देने होंगे। प्रत्येक उत्तर लगभग 250 शब्दों का होगा। इस खण्ड के लिए 15(5 X 3) अंकों का होगा ।
5. खण्ड–(घ) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों से संबंधित है। यहां व्याख्यार्थ निर्धारित पाठ्य पुस्तक पर आधारित दस वस्तुनिष्ठ प्रश्न पूछे जाएंगे । इस प्रश्न में कोई विकल्प नहीं होगा। यह खण्ड 10(10 X 1) अंकों का होगा ।

व्याख्या हेतु निर्धारित पाठ्य ग्रन्थ

1. अग्निगर्भ (बंगला उपन्यास) – महाश्वेता देवी
2. घासीराम कोतवाल (मराठी नाटक)–विजय तेंदलुकर

आलोचनात्मक एवं लघूत्तरी प्रश्नों के लिए निर्धारित

बंगला साहित्य का इतिहास

चैतन्य पूर्व वैष्णव साहित्य (10–15वीं शती), विद्यापति, मालान्धर बसु, मंगल काव्य : विजय गुप्त, नारायणदेव, चैतन्य वैष्णव युग (16वीं शती) गौड़ीय, वैष्णव पदावली, चंडीमंगल काव्य, चैतन्य जीवनी, चैतन्योत्तर युग (17वी शती) मंनसामंगल, चंडीमंल, दुर्गामंगल काव्य, इस्लामी काव्य, नाथ साहित्य, आधुनिक युग (18वीं शती), बंगला गद्य (उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध) का उदय और विकास, फोर्ट विलियम कॉलेज, राजाराम मोहनराय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय, रमेशचन्द्र दत्त, तारकनाथ गंगोपाध्याय, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, आधुनिक कविता ।

सन्दर्भ सामग्री

1. लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय, फोर्ट विलियम कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, 1948
2. सुकुमार सेन, बंगला साहित्य की कथा, हिन्दी साहित्य, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 2009 (वि.)
3. हजारीप्रसाद द्विवेदी, मध्यकालीन धर्म साधना, साहित्य भवन, इलाहाबाद 2013 सं.
4. परशुराम चतुर्वेदी, मध्यकालीन प्रेम साधना, आत्माराम एंड सन्स, दिल्ली, 1952

5. सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', रवीन्द्र कविता कानन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1955
6. नगेन्द्र नाथ गुप्त, विद्यापति ठाकुर की पदावली, इण्डियन प्रैस, प्रयाग, 1910
7. सुकुमार सेन, बंगला साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 1970